[This question paper contains 4 printed pages.]

8873 *आपका अनुक्रमांक* .....

B.A. (Pass)/III **AS**

HINDI (A) – Paper III

हिन्दी (क) - प्रश्नपत्र III

(भाषा-अनुप्रयोग, हिन्दी साहित्य का इतिहास, निबंध-लेखन, गद्य संकलन)

(प्रवेशवर्ष 2000 से 2003 for Category 'A' और 2000 से 2005/2006 For N.C.W.E.B., Non-Formal Cell/S.O.L.)

समय : 3 घण्टे *पूर्णांक : 100*

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

टिप्पणी :- प्रश्नपत्र पर अंकित पूर्णांक SOL/NCWEB/Non-Formal cell के विद्यार्थियों के लिए अनुप्रयोज्य हैं। तथापि ये अंक नियमित कॉलेजों के विद्यार्थियों के संबंध में उनके परिणाम के संकलन के लिए नियुक्त अधीनिर्णय के समय पर, उनके आनुपातिक रूप में कम होंगे।

1. किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) उस समय परिवार में कन्याओं की अभ्यर्थना नहीं होती थी। आँगन में गानेवालियाँ, द्वार पर नौबतवाले और परिवार के बूढ़े से लेकर बालक तक सब पुत्र की प्रतीक्षा में बैठे रहते थे। जैसे ही दबे स्वर से लक्ष्मी के आगमन का समाचार दिया गया, वैसे ही घर के एक कोने से दूसरे तक दरिद्र निराशा व्याप्त हो गई। बड़ी-बूढ़ियाँ

P.T.O.

संकेत से मूक गानेवालियों को जाने के लिए कह देतीं और बड़े-बूढ़े इशारे से नीरब बाजे वालों को विदा देते - यदि ऐसे अतिथि का भार उठाना परिवार की शक्ति से बाहर होता, तो उसे बैरंग लौटा देने के उपाय भी सहज थे।

(ख) एक तो पीठ में गुदगुदी लग रही है। दूसरे रह-रहकर चम्पा का फूल खिल जाता है उसकी गाड़ी में। बैलों को डाँटों तो इस-विस करने लंगती है उसकी सवारी। .. उसकी सवारी! और अकेलीं, तम्बाकू बेचनेवाली बूढ़ी नहीं ' आवाज़ सुनने के बाद वह बार-बार मुड़कर टप्पर में एक नज़र डाल देता है; अंगोछे से पीठ झाड़ता है। ... भगवान जाने क्या लिखा है इस बार उसकी किस्मत में! गाड़ी जब पूरब की ओर मुड़ी, एक टुकड़ा चाँदनी उसकी गाड़ी में समा गयी सवारी की नाक पर एक जुगनू जगमगा उठा।

(ग) हम पगडंडियों से बढ़ते जा रहे थे। सूर्य आकाश में चढ़ने लगा था। कहीं-कहीं कोई किसान किसी पेड़ की छाया में बैठा दीख पड़ता था। सर्वत्र नीखता छा रही थी। आकाश में बादल तैर रहे थे, जिन्हें देख कर खेतों से एक सोंधी-सी उसाँस उमंग उठती थी। दूर हरियाली की लहर तेज चलती हवा की तरंगों पर गूंज-सी उठती थी। हरी भरी पृथ्वी पर कभी-कभी बादलों के छा जाने से कहीं धूप और कहीं छाया, बरबस हृदय को अपनी ओर आकर्षित कर लेती थी। किन्तु मेरे साथी को जैसे इन सब बातों में कोई दिलचस्पी नहीं थी। बायां हाथ उठाकर वह कह रहा था - वही है, शिद्धिरगंज, देख रहे हो न वह ताड़ का पेड़?

(घ) चित्रगुप्त ने कहा - महाराज, आजकल पृथ्वी पर इस प्रकार का व्यापार बहुत चला है लोग दोस्तो को कुछ चीज़ भेजते हैं और

उसे रास्ते में ही रेलवेवाले उड़ा लेते हैं। हौज़री के पार्सलों के मोज़े रेलवे के अफसर पहनते हैं। मालगाड़ी के डब्बे के डब्बे रास्ते में कट जाते हैं। एक बात और हो रही है, राजनैतिक दलों के नेता विरोधी नेता को उड़ाकर बन्द कर देते हैं। 'कहीं भोलाराम के जीव को भी तो किसी विरोधी ने मरने के बाद खराबी करने के लिए नहीं उड़ा दिया ?' (10×2=20)

2. 'ममता' **अथवा** 'सच्ची वीरता' का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए। (10)

3. 'तिष्यरक्षिता' **अथवा** 'रामा' की चारित्रिक विशेषताओं का उद्घाटन कीजिए। (10)

4. 'प्रयोगवाद' **अथवा** 'छायावाद' की काव्यगत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। (10)

5. हिंदी नाटक **अथवा** हिंदी निबंध का संक्षिप्त विकास लिखिए। (10)

6. (क) कार्यालयी पत्र का स्वरूप स्पष्ट कीजिए। (5)

(ख) विज्ञापन लेखन की विशेषताओं को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए। (5)

(ग) किसी **एक** का पल्लवन कीजिए :

(i) का वर्षा जब कृषि सुखाने

(ii) भाग्य और पुरुषार्थ (5)

(घ) निम्नलिखित अनुच्छेद का हिंदी में अनुवाद कीजिए :

Citizenship rights include civil, political and social rights. Civil rights involve the freedom of individuals to live where they choose; freedom of

speech and religion; the right to own property; and the right to equal justice before the law. Political rights include the right to participate in election and to stand for public office. In most countries governments were reluctant to admit the principle of universal franchise.

अथवा

प्रस्तुत गद्यांश का सार लिखिए और उपयुक्त शीर्षक दीजिए :

मानव को मानव के रूप में सम्मानित करके ही हम जातीयता, प्रांतीयता, क्षुद्र राष्ट्रीयता और अन्तर्राष्ट्रीयता के भेद को तोड़ सकते हैं। आज मानव-मानव से दूर हटता जा रहा है। वह भूल चुका है कि देश, धर्म और जाति के भिन्न होते हुए भी हम सर्वप्रथम मानव हैं और समान हैं तथा सभी की भावनाएँ और लक्ष्य एक ही हैं। आज धर्म, देश, सत्ता, धन आदि का भेद होने से एक मानव दूसरे मानव को मानव ही नहीं मानता है। कभी-कभी स्वधर्मी विधर्मी को, स्वदेशी विदेशी को, अफ़सर चपरासी को, धनिक निर्धन को तथा विद्वान निरक्षर को इंसान ही नहीं समझता है और वह भूल जाता है कि दूसरे को भी समान रूप से भूख, प्यास सताते हैं तथा उसे भी प्रेम और आदर चाहिए। (10)

7. किसी **एक** विषय पर निबंध लिखिए : (15)

(i) नई संचार क्रांति

(ii) क्रिकेट की लोकप्रियता

(iii) विज्ञापन और व्यवसाय

(iv) दिल्ली मैट्रो

(v) जनसंख्या नियंत्रण